2026 Volume: 02 Issue: 09 www.ijrpa.com ISSN 2456-9995 Research Article

International Journal Research Publication Analysis

Page: 01-08

सूरत शहर के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के अध्ययन शैली का अभ्यास

Pranshu Singh*[1] and Dr. Atul Kanaiya[2]

[1]Research Scholar, Department of Education, Kranti Guru Shyamji Krishna Verma University, Kachchh

[2] Assistant Professor, Department of Education, Kranti Guru Shyamji Krishna Verma University, Kachchh

Article Received: 02 August 2026
Article Revised: 22 August 2026
Published on: 12 September 2026

***Corresponding Author: Pranshu Singh**
Research Scholar, Department of Education, Kranti Guru Shyamji Krishna Verma University, Kachchh
DOI: https://doi-doi.org/101555/ijrpa.6392

ABSTRACT

इस शोधपत्र में सूरत शहर के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन शैली का अध्ययन किया गया है। शिक्षा मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है, और इसकी प्रभावशीलता विद्यार्थी की अध्ययन शैली पर निर्भर करती है। अध्ययन शैली किसी विद्यार्थी के सीखने की प्रक्रिया, उसकी सूचनाओं को ग्रहण करने के तरीके और उसे समझने की युक्तियों की पहचान करती है। इस शोध में पी. कटातन हेनरी द्वारा विकसित अध्ययन शैली प्रश्नावली का उपयोग कर विद्यार्थियों की अध्ययन शैली का विश्लेषण किया गया। शोध से यह निष्कर्ष निकला कि ज्यादातर विद्यार्थी क्रिया द्वारा अध्ययन करना पसंद करते हैं, जबकि कुछ विद्यार्थी सुनकर या देखकर सीखने में अधिक रुचि दिखाते हैं।

चाबीरूप शब्द: *अध्ययन शैली*

प्रस्तावना

शिक्षा मनुष्य के जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक एवं महत्वपूर्ण तकनीक है शिक्षण के द्वारा मनुष्य की वाह्य एवं आंतरिक शक्तियों, योग्यताओं, क्षमताओं तथा गुणों का विकास एवं प्रसारण किया जा सकता है| शिक्षा बालक को अज्ञानता से मुक्ति दिलाता है| बालक के जीवन में शिक्षा अर्थात अध्ययन के साथ अध्ययन की शैली का विशेष महत्व है| किसी भी विषय वस्तु को एक उचित तरीके से समझने व सिखाने के लिए उचित अध्ययन शैली की पसंद की अत्यंत आवश्यक है क्योंकि अध्ययन शैली बालक के सीखने के तरीके युक्ति एवं सूचना प्राप्ति के तरीके की तरफ इशारा करती है|

सामान्यतः देखा जाए तो अध्ययन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें बालक के व्यवहार में अनुभव, अभ्यास, शिक्षण के जरिए परिवर्तन एवं ज्ञान में वृद्धि किया जा सकता है| हर एक मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक कुछ न कुछ सीखना ही रहता है| अध्ययन कहीं पर भी किसी भी परिस्थिति में घटित हो सकता है| हम विभिन्न चीज़ों, वस्तुओं स्थान व्यक्तियों एवं प्रकृति से सीखते हैं| अध्ययन की संकल्पना के अनुसार जन्म से ही प्रत्येक बालक के अंदर कुछ विशिष्ट शक्तियां विद्यमान होती है और समय अनुसार बालक विविध परिस्थितियों के साथ अपने आप को समायोजित करना सीख लेता है| परंतु इस समायोजन के लिए वह आदत, अभ्यास, ज्ञान, अभिवृत्ति तथा कौशल इत्यादि को अर्जित करता है| इन सबके लिए उसे मेहनत अर्थात अभ्यास करना पड़ता है यही अध्ययन है।

अध्ययन शैली साधारण तौर से सीखने के संबंध में विभिन्न उपगमन अथवा मार्ग है अतः हम कह सकते हैं कि वह शैक्षिक विधियां जो विशिष्ट व्यक्ति के लिए होती है और जिनके संबंध में यह मान लिया जाता है कि वह व्यक्ति को सबसे उत्तम सीखने की तरफ लेकर जायेंगे| यह आमतौर से विश्वास किया जाता है अधिकतर व्यक्ति किसी विशिष्ट विधि को पसंद करते हैं अंत क्रिया करने में, सूचना अथवा उत्तेजको को अंतर्गत करने में तथा प्रक्रिया करने में| इस धारणा पर आधारित 1970 के दशक में व्यक्तिगत अध्ययन की शैलियों का विकास हुआ और इसको वर्तमान वर्षों में बहुत लोकप्रियता मिली है| अध्ययन शैली को एक समान तरीके से देखा जाए तो कहा जा सकता है प्रत्येक छात्र विविध तरीकों से सीखना है जैसे देखकर, सुनकर, समूह कार्य से, तार्किक सोच से, अंतर्बोध से, कल्पना से, अभिप्रेरणा से, कंठस्थ करने से आदि| प्रस्तुत अनुसंधान में अनुसंधानकर्ता ने पी. कटातन हेनरी द्वारा निर्मित एवं प्रमाणित अध्ययन शैली प्रश्नावली का उपयोग करके सूरत शहर के माध्यमिक विद्यालयों के अध्ययन शैली का अभ्यास कर रहा हैं |

समस्याकथन

प्रस्तुत अनुसंधान का समस्याकथन निम्नलिखित हैं –

"सूरत शहर के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के अध्ययन शैली का अभ्यास"

चावीरूपी शब्दों की व्याख्या

सूरत शहर

प्रस्तुत शहर में सूरत शहर भारत के गुजरात राज्य का एक महत्वपूर्ण शहर है | भौगोलिक दृष्टि से 21°.0′ से 21°.23′ उत्तर अक्षांश तथा 72°.0′से 74^{0}.0′ पूर्व अक्षांश के बीच स्थित भू –भाग अर्थात सूरत शहर जिसका कुल क्षेत्रफल लगभग 463 वर्ग किलोमीटर है |

माध्यमिक विद्यालय

POA(1992) के अनुसार " कक्षा 9 एवं 10 की शिक्षा प्रदान करने वाली स्कूली व्यवस्था को माध्यमिक विद्यालय के अंतर्गत समावेशित किया गया है|

प्रस्तुत संशोधन में माध्यमिक विद्यालय मतलब गुजरात माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सलंग्न विद्यालय जहाँ कक्षा 9 एवं 10 की शिक्षा प्रदान की जाती है |

विद्यार्थी

प्रस्तुत संशोधन में विद्यार्थी मतलब माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन करते छात्र-छात्राएं|

अध्ययन शैली

कोल्ब (1984) के अनुभवमुलक अध्ययन सिद्धांत में निर्दिष्ट अध्ययन चक्र के विविध चरणों के उपयोग की व्यक्तिगत पसंदगी अर्थात अध्ययन शैली|

लैकार्क (1978) ने अध्ययन शैली को निर्देशित वातावरण में किसी चरो के प्रतिक्रिया के व्यक्तिगत विधि की तरह माना है| विस्तृत रूप से अध्ययन शैली वे तरीके है, जिसके द्वारा बालक अच्छे ढंग से सीखता है|

प्रस्तुत संशोधन में अध्ययन शैली अर्थात माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन शैली जानने के लिए उपयोग में आने वाली अध्ययन शैली प्रश्नावली से हैं|

अनुसन्धान के उद्देश्य

1. सूरत शहर के माध्यमिक विद्यालय के बालक और बालिकाओं के अध्ययन शैली के बारे में अभ्यास करना |

2. सूरत शहर के माध्यमिक विद्यालय के हिंदी माध्यम और अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थीयों के अध्ययन शैली के बारे में अभ्यास करना |

अनुसंधान के प्रश्न

1.सूरत शहर के माध्यमिक विद्यालय के बालक और बालिकाओं की अध्ययन शैली कैसी हैं?

2. सूरत शहर के माध्यमिक विद्यालय के हिंदी माध्यम और अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थीयों की अध्ययन शैली कैसी हैं?

अनुसंधान के महत्त्व

1. प्रस्तुत अनुसंधान से विद्यार्थियों की सिखने की पद्धति के बारे में जाना जा सकता हैं |
2. प्रस्तुत अनुसंधान से विद्यार्थियों को वर्गखंड में अध्ययन कैसे कराया जाये इसका आधार प्राप्त होगा |
3. प्रस्तुत अनुसंधान शिक्षको को अध्ययन –अध्यापन कराने में सहायता प्रदान करेगी|
4. प्रस्तुत अनुसंधान विद्यार्थी के भविष्य अच्छा बनाने में दिशा प्रदान करेगी |
5. प्रस्तुत अनुसंधान शाला, समाज एवं विद्यार्थियों के लिए उपयोगी होगा |
6. विद्यार्थिओं में अध्ययन के प्रति रस -रूचि जागृति हो इसके लिए कार्यक्रम की रचना करने की प्रेरणा प्राप्त होगा |
7. विद्यार्थिओं का अध्ययन के प्रति प्रेम, रूढी, पूर्वग्रहों, विचारो, मान्यताओ, भय और धमकियों का निराकरण किया जा सकेगा हैं |

सीमांकन

1. प्रस्तुत अनुसन्धान गुजरात माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के हिंदी माध्यम के माध्यमिक विद्यालय और अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों तक सीमित हैं |
2. प्रस्तुत अनुसंधान माध्यमिक विद्यालयों के 9वी कक्षा तक सीमित हैं |
3. प्रस्तुत अनुसंधान सूरत शहर के माध्यमिक विद्यालयों तक सीमित हैं |

निदर्श

प्रस्तुत अनुसंधान में निदर्श के रूप में 200 माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों को पसंद किया हैं | जिसकी जानकारी निम्नलिखित सारणी में हैं |

क्रम	अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थी		हिंदी माध्यम के विद्यार्थी	
	बालक	बालिका	बालक	बालिका
1.	55	45	52	48
कुल	100		100	

उपकरण

प्रस्तुत अनुसन्धान में अनुसन्धानकर्ता ने उपकरण के रूप में पी. कटातन हेनरी द्वारा निर्मित एवं प्रमाणित अध्ययन शैली प्रश्नावली का उपयोग किया हैं |

अनुसंधान की पद्धति : प्रस्तुत अनुसंधान की पद्धति सर्वेक्षण पद्धति हैं |

माहिती एकत्रीकरण की रीती : प्रस्तुत संशोधन में संशोधक जानकारी प्राप्ति के लिए सबसे पहले स्वयं विद्यालय में जाकर आचार्य से मिलकर उनको अपने संशोधन के बारे में बताया और आचार्य से अनुमति प्राप्त करके विद्यार्थियो को अध्ययन शैली संशोधनिका की सूचनाओ के बारे में जानकारी देकर संशोधक विद्यार्थियो से अध्ययन शैली संशोधनिका उपकरण भरवाया|

माहिती पृथक्करण की रीती

प्रस्तुत अनुसंधान में अनुसंधानकर्ता ने माहिती का पृथक्करण में प्रतिशतता का उपयोग किया हैं |

माहिती का पृथक्करण एवं अर्थघटन

1. **सूरत शहर के माध्यमिक विद्यालय के बालक और बालिकाओं के अध्ययन शैली का अर्थघटन**

प्रस्तुत अनुसंधान में सूरत शहर के माध्यमिक विद्यालय के अध्ययन शैली का विवरण नीचे की सारणी संख्या -1 में प्रस्तुत हैं -

सारणी संख्या -1

क्रम	**बालक (प्रतिशत)**	**बालिका (प्रतिशत)**	**कुल (प्रतिशत)**
सुनकर	32 (29.91)	24 (25.80)	56(28.00)
देखकर	35 (32.72)	22 (23.65)	57 (28.50)
क्रिया द्वारा	40 (37.39)	47 (50.53)	87 (43.50)
कुल	107	93	200

उपरोक्त सारणी संख्या -1 से यह कहा जा सकता हैं कि सुनकर अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों में 29.91 प्रतिशत बालक तथा 25.80 प्रतिशत बालिका विद्यार्थी हैं | देखकर अध्ययन करने वालों में 32.72 प्रतिशत बालक तथा 23.65 प्रतिशत बालिका विद्यार्थी हैं | क्रिया द्वारा अध्ययन करने वालों में 37.39 प्रतिशत बालक तथा 50.53 प्रतिशत बालिका विद्यार्थी हैं | अतः यह स्पष्ट हैं कि सुनकर अध्ययन करने की बालकों संख्या, बालिकाओं की संख्या के तुलना में अधिक हैं और देखकर अध्ययन करने वालों में भी बालकों की संख्या बालिकाओं से अधिक हैं तथा क्रिया द्वारा अध्ययन करने में वालों में बालिकाओं की संख्या बालकों से अधिक हैं |

उपरोक्त सारणी संख्या -1 में अध्ययन शैली के क्रम के आधार पर देखकर यह पता चलता हैं कि सुनकर अध्ययन करने वालों में 28.00 प्रतिशत, देखकर अध्ययन करने वालों में 28.50 प्रतिशत तथा क्रिया द्वारा अध्ययन करने वालों में 43.50 प्रतिशत विद्यार्थी है | अतः यह स्पष्ट हैं अधिकतर विद्यार्थी क्रिया द्वारा अध्ययन करना पसंद करते हैं |

2. सूरत शहर के माध्यमिक विद्यालय के हिंदी माध्यम और अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के अध्ययन शैली का अर्थघटन :

प्रस्तुत अनुसंधान में सूरत शहर के माध्यमिक विद्यालय के हिंदी माध्यम और अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के अध्ययन शैली का विवरण नीचे की सारणी संख्या -2 में प्रस्तुत हैं -

सारणी संख्या -2

क्रम	**हिंदी माध्यम (प्रतिशत)**	**अंग्रेजी माध्यम (प्रतिशत)**	**कुल (प्रतिशत)**
सुनकर	29 (21.11)	27(29.04)	56 (28.00)
देखकर	27 (25.24)	30 (32.26)	57 (28.5)
क्रिया द्वारा	40 (37.39)	47 (50.54)	87 (43.5)
कुल	107	93	200

उपरोक्त सारणी संख्या -2 से यह कहा जा सकता हैं कि सुनकर अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों में 21.11 प्रतिशत हिंदी माध्यम तथा 29.04 प्रतिशत अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थी हैं | देखकर अध्ययन करने वालों में 25.24 प्रतिशत हिंदी माध्यम तथा 32.26 प्रतिशत अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थी हैं | क्रिया द्वारा अध्ययन करने वालों में 37.39 प्रतिशत हिंदी माध्यम तथा 50.54 प्रतिशत अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थी हैं | अतः यह स्पष्ट हैं कि सुनकर अध्ययन करने वालो में अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की संख्या, हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक हैं और देखकर अध्ययन करने वालों में भी अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की संख्या, हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों से अधिक हैं तथा क्रिया द्वारा अध्ययन करने में वालों में अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की संख्या हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों से अधिक हैं |

उपरोक्त सारणी संख्या -2 में अध्ययन शैली के क्रम के आधार पर देखकर यह पता चलता हैं कि सुनकर अध्ययन करने वालों में 28.00 प्रतिशत, देखकर अध्ययन करने वालों में 28.50 प्रतिशत तथा क्रिया द्वारा अध्ययन करने वालों में 43.50 प्रतिशत विद्यार्थी है | अतः यह स्पष्ट हैं अधिकतर विद्यार्थी क्रिया द्वारा अध्ययन करना पसंद करते हैं |

निष्कर्ष

1. सुनकर अध्ययन करने बालकों की संख्या बालिकाओं की तुलना में अधिक हैं और देखकर अध्ययन करने वालों में भी बालकों की संख्या बालिकाओं से अधिक हैं तथा क्रिया द्वारा अध्ययन करने में वालों में बालिकाओं की संख्या बालकों से अधिक हैं और अधिकतर विद्यार्थी क्रिया द्वारा अध्ययन करना पसंद करते हैं |

2. सुनकर अध्ययन करने वाले में अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की संख्या, हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों की तुलना में कम हैं और देखकर अध्ययन करने वालों में अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की संख्या, हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों से अधिक हैं तथा क्रिया द्वारा अध्ययन करने में वालों में अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की संख्या हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों से अधिक हैं और अधिकतर विद्यार्थी क्रिया द्वारा अध्ययन करना पसंद करते हैं |

सन्दर्भ साहित्य

1. Barker I.**(**2006**)**.Cambridge international diploma for teachers and trainers textbook.Published by foundation books Pvt. Ltd.Cambridge.
2. Best J.W.(1997).Research in education USA.Peretice, hall INCTTLS.
3. Dunn, R., & Dunn, K. (1992). Teaching secondary students through their individual learning styles. Boston. Allyn & Bacon.Retrived from: https://webs.um.es/rhervas/miwiki/lib/exe/fetch.php%3Fmedia%3Dlscy_rimanual_v1.pdf
4. Frender G.(2014). Learning to learn.Vikas publication house Pvt. Ltd. Noida.
5. Gupta S.P.(2015).Research Introductory. Allhabad:Sharada Pustal Bhavan
6. Honey, P. and Mumford, A. (1986a) The Manual of Learning Styles, Peter Honey Associates. Retrived From: https://www.open.edu/openlearn/pluginfile.php/629607/mod_resource/content/1/t175_4_3.pdf.
7. L. J.Cronbach(1984). Essentials of Psychological Testing. New York University of Illinois Harper and Brothers.
8. Merriam-Webster, (2011). Merriam-Webster's Online Dictionary, Retrived From: URL: https://www.merriam-webster.com/dictionary/inventory
9. National Council of Teacher education(2006).NCERT. Retrived on July 07, 2022, From: https://ncert.nic.in/textbook.php?khpy1=6-9.
10. Program of Action(1992). Ministry of Human Resource Development Department of Education New Delhi. Retrived from:

https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/document-reports/POA_1992.pdf

11. P.G.Terry and J.Thomas(1977).The International Dictionary of Education, London. Oxford University Press.
12. उचाट डी.ये.(2012).शिक्षण और सामाजिक विज्ञान में संशोधन का पद्ध्तिशास्त्र (द्वितीय आवृत्ति).अहमदाबाद: पारस प्रकाशन.
13. गुप्ता एस.पी. एवं गुप्ता ए.(2014). उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान सिद्धांत एवं व्यवहार.शारदा पुस्तक भवन.यूनिवर्सिटी रोड प्रयागराज.
14. देसाई के जी.(2013). मनोवैज्ञानिक मापन. अहमदाबाद,यूनिवर्सिटी ग्रन्थ निर्माण बोर्ड
15. पटेल आर. एस.(2013).शिक्षण में संशोधन. अहमदाबाद,जय पब्लिकेशन.
16. शुक्ल एस.एस.(2014). शैक्षणिक मनोविज्ञान. अहमदाबाद :अग्रवाल प्रकाशन.
17. शाह डी.बी.(2004). शैक्षणिक संशोधन. अहमदाबाद :यूनिवर्सिटी ग्रन्थ निर्माण बोर्ड.